-=:: क्या सोवे सुख नींद ::=-

मुसाफिर परदेशी रे, क्या सोवे सुख नींद |
बटाऊ भोला परदेशी रे. क्या सोवे सुख नींद ||

राम नाम का सुमिरण करले, हरी का ध्यान हिरदै बिच धरले |
साधो भाई रे छोड़ दे कपट का जंजाल, कटेगी तेरी चौरासी रे || १ ||

आगे आगे गाँव ठगा की नगरी, छीन लेगा हीरा की गठड़ी |
साधो भाई रे बे चोरण का है गाँव, न्याय तेरो कुण करसी रे || २ ||

गगन मण्डल में उरध मुखी कुआ, सब साधन मिल प्रसन्न हुआ |
साधो भाई रे तरबीणी के घाट उतर, मल मल न्हासी || ३ ||

नाथ गुलाब गूरू पूरा पाया, जाळ जुलम सब दूर हटाया |
साधो भाई रे गुण गावै भानीनाथ, गुराजी ल्याया रंगबूटी रे || ४ ||
जय श्री नाथ जी की...